Rs. 10/-

Readers' Club Bulletin

पाठक मंच बुलेटिन

nbt.india

एकः सूते सकलम्

Vol. 19, No. 4, April 2014

Readers' Club Bulletin
पाठक मंच बुलेटिन

Vol. 19, No. 4, April 2014 **वर्ष 19, अंक 4, अप्रैल 2014**

Editor / संपादक
Manas Ranjan Mahapatra
मानस रंजन महापात्र

Assistant Editors / सहायक संपादकगण
Deepak Kumar Gupta
दीपक कुमार गुप्ता
Surekha Sachdeva
सुरेखा सचदेव

Production Officer / उत्पादन अधिकारी
Narender Kumar
नरेन्द्र कुमार

Illustrator / चित्रकार
Srinia Chowdhury
श्रीनिया चौधुरी

Printed and published by Mr. Satish Kumar, Joint Director (Production), National Book Trust, India, Nehru Bhawan 5, Institutional Area, Phase-II, Vasant Kunj, New Delhi-110070

Typesetted & Printed at Pushpak Press Pvt, Ltd. 203-204, DSIDC Shed, Ph-I Okhla Ind. Area, N.D.

Contents/सूची

World Book and		1
सात समुंदर	डॉ. अमिताभ शंकर राय चौधरी	2
Yuni and the Ox	O Yong-su	5
जादुई आम	रुचि सिंह	8
दो कविताएँ	निर्मला सिंह	10
सबसे बड़ी आज़ादी	सुरेन्द्र श्रीवास्तव	11
Disastrous Decision	Srihari Nayak	13
नींद उड़ गई	दर्शन सिंह आशट	15
चित्र पहेली	*राज्य संसाधन केन्द्र (साभार)*	16
बूझो तो जानें	मधु पंत, धर्म प्रकाश	17
Burn the Evils	Shashi Jain	18
छूट गई शैतानी	डॉ. सुनील कुमार 'सुमन'	20
देखा एक खिलौना जी	ओमप्रकाश शास्त्री	22
The Winner	Avril Dsouza	23
लकड़हारे का अच्छा काम	निकिता	26
When Kangaroo...	Farhan	27
The World in ...	Arjun D. Chowdhury	30
घरेलू सामान से.....	आइवर यूशिएल	31
मछली	प्रकाश 'सूना'	32

Editorial Address/ **संपादकीय पता**

National Centre for Children's Literature, National Book Trust, India, Nehru Bhawan 5, Institutional Area, Phase - II, Vasant Kunj, New Delhi-110070

राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेस-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070

E-Mail (ई-मेल) : office.nbt@nic.in

Per Copy/ एक प्रति Rs. 10.00 Annual subscription/वार्षिक ग्राहकी : **Rs. 100.00**

Please send your subscription in favour of **National Book Trust, India.**

कृपया भुगतान **नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया के** नाम भेजें।

This Bulletin is meant for free distribution to Readers' Clubs associated with National Centre for Children's Literature.

यह बुलेटिन राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र से जुड़े पाठक मंचों को निशुल्क वितरित किया जाता है।

World Book and Copyright Day

23 April is celebrated as the World Book and Copyright Day across the globe every year by the UNESCO. It is celebrated to pay tribute to books, authors and illustrators for their contribution towards the social and cultural development of the society. On this day, everyone especially the young people and children are encouraged to read more and more books, discover the pleasure of reading, enhance knowledge and explore the creativity within them. It also aims at promoting publishing and protecting the intellectual property using copyright.

It is a symbolic date in the world literature as on this day falls the birth or death anniversary of well-known writers like Miguel de Cervantes, William Shakespeare, Vladimir Nabokov, Manuel Mejja Vallejo, Haldor K Laxness among others. For this reason, in the year 1995, UNESCO's General Conference held in Paris decided to celebrate this day as the World Book and Copyright Day.

Every year, UNESCO and the international organisations representing the book industry—International Publishers Association (IPA), International Booksellers Federation (IBF) and the International Federation of Library Associations and Institutions (IFLA) select the World Book capital

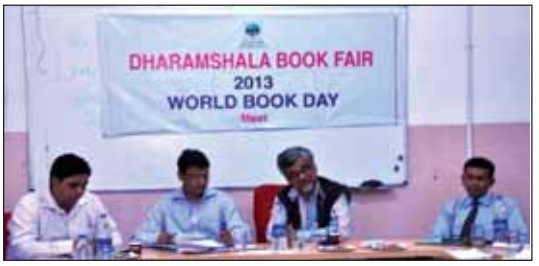

for a period of one year. This year, the city of Port Harcourt (Nigeria) has been named as the World Book Capital. It is the 14th city to be designated as the World Book Capital. Madrid, capital of Spain was the first World Book Capital, New Delhi, capital of our country was chosen as the World Book Capital in the year 2003.

National Book Trust, India also celebrates World Book and Copyright Day every year by organising several book related events like seminars, book release functions, workshops, competitions at different places in the country. Last year, National Centre for Children's Literature celebrated World Book and Copyright Day by organising interactive discussion on *Reading Habit* at Central University of HP and a workshop for children at Lower Tibetan Village School, Dharamshala. Various activities for children were also organised by NBT in Tirupati (Andhra Pradesh), Chhattarpur (Madhya Pradesh), Cuttack (Odisha) and Amritsar (Punjab).

धारावाहिक उपन्यास
भाग : 13

सात समुंदर

चोर! चोर!

डॉ. अमिताभ शंकर राय चौधरी

पंपा में अगस्त के दूसरे शनिवार को 'स्नेक बोट रेस' का आयोजन होता है। यहाँ दूर-दूर से सैलानी इस रेस को देखने आते हैं। पंपा के किनारे सड़क पर टेम्पो में आते हुए ऑर्थर अपने भविष्य के बारे में सोच रहा है—आगे वह बैडमिंटन खेल पाएगा या नहीं। अब इस अंक में कुछ और बातें ...

विश्वविद्यालय के छोटे घुमावदार गेट से बाहर आते ही गायत्री की नज़र अपनी साइकिल पर पड़ी। वह चिल्ला उठी, "दद्दा, देखो, चोर, चोर!"

एक आदमी साइकिल का ताला खोलने की कोशिश कर रहा था। उसने झटका दिया। ताला खुल गया। पल भर में वह साइकिल पर सवार था।

गायत्री चिल्लाते-चिल्लाते उसके पीछे दौड़ रही थी— "अरे, चोर! चोर! अप्पुपन की साइकिल लेकर भाग रहा है!"

तब तक नारायणन भी बाहर आ चुके थे। वे अंदर की ओर लपके और आवाज लगाई, "कुमारन, मेरी साइकिल!"

ट्रेनिंग के बाद कुमारन भी धीरे-धीरे उनके पीछे-पीछे आ रहा था। वह भागकर आया, "क्या बात है सर?"

"वह आदमी मेरी साइकिल लेकर भाग रहा है।" नारायणन परेशान हो उठे। यह कैसी आफत है?

"घबराइए मत।" कहते हुए कुमारन ने झट से अपना स्कूटर स्टार्ट किया और उसी ओर भागा।

"वो, वो जा रहा है!" गायत्री चिल्लाते-चिल्लाते सड़क पर दौड़ रही थी।

नारायणन भी हाँफते हुए उधर चलने लगे।

देखते-ही-देखने कुमारन ने साइकिल के आगे स्कूटर खड़ा कर दिया। उसने उस आदमी को एक धक्का मारा। वह गिर पड़ा और साइकिल छोड़कर भागने की कोशिश करने लगा। परंतु जाता कहाँ? इतने में राह चलते और लोग जमा हो गए थे। स्विमिंग पूल के कर्मचारी भी आ धमके, उसकी 'आरती' उतारी जाने लगी।

''अरे, छोड़ो-छोड़ो, क्या कर रहे हो?'' नारायणन ने सोचा, यह अच्छा झमेला है।

ऐसे में हाथ गरमा लेने वालों की कमी कहाँ होती है! उस चोर की फटी हुई कमीज चिथड़े में बदल गई।

कुछ लोग फोकट में सर्कस देख रहे थे। एक पुलिस का आदमी भी सिगरेट पीते-पीते तमाशा देख रहा था।

''यह मेरे अप्पुपन की साइकिल ले जा रहा था। मैं कल फिर कैसे आती?'' गायत्री बड़ी नाराज थी।

''अरे, मत मारो, इसे छोड़ो भी! यह तो मर जाएगा।'' नारायणन ने बीच-बचाव किया।

''सब ड्रग लेने वाले हैं, चोरी-छिनौती करते रहते हैं।'' किसी सज्जन की राय थी।

''इसे तो पुलिस के हवाले करना चाहिए!'' कुमारन ने उसका कॉलर पकड़कर कहा।

''अब इसे छोड़ो भी। कौन इस बखेड़े में पड़े। इसे सजा मिल चुकी है।''

वह आदमी नारायणन के पैरों से लिपटकर गिड़गिड़ाने लगा, ''छोड़ दीजिए बाबू जी।''

गायत्री का मन भी आर्द्र हो गया।

धीरे-धीरे भीड़ छँटने लगी। कुमारन ने उसके हाथों में साइकिल देते हुए कहा, ''देखिए, कैसे-कैसे झमेले होते हैं।''

गायत्री उछलकर साइकिल के रॉड पर बैठने ही वाली थी कि उसने देखा, जो सिपाही अब तक दूर खड़ा तमाशा देख रहा था, उसमें बला की फुर्ती आ गई थी।

चोर बेचारा अपने मुक्तिदाता नारायणन को प्रणाम कर सिर के बल भाग रहा था कि उस पुलिसवाले ने उसका गला धर दबोचा। ''कहाँ भाग रहा है? चोरी करता है?...''

गायत्री रुआँसी हो गई, ''अप्पुपन, वह फिर उसे मारेगा क्या? बेचारा!''

कुमारन ने कहा, ''उसकी कमाई जो गई! हम यदि उसे उनके हवाले करते तो वे कुछ ले-देके छोड़ते न! ऐसे तो खाली हाथ विदा करना पड़ रहा है।''

''नहीं-नहीं, यह गलत बात है!'' नारायणन उधर आगे बढ़ गए। ''भाई इसे छोड़िए। मैंने तो आपसे कोई शिकायत नहीं की।''

कुमारन समझ गया कि नया बवाल होने वाला है, ''सर छोड़िए, घर जाइए।'' कहते-कहते वह भी उनके पीछे हो लिया।

''कानून अपने हाथ में लेते हो? पुलिस में रिपोर्ट क्यों नहीं की?'' उलटे वही सिपाही नारायणन से बेतकल्लुफ होकर बोला।

कुमारन को भी गुस्सा आ गया, ''ऐ जानते हैं, किससे बात कर रहे हैं! ये हरिपदम गाँव के हेडमास्टर साहब हैं।''

''अरे, ऐसे मास्टर-वास्टर को बहुत देखा है। ले चलेंगे थाने तो चावल-नारियल का भाव मालूम पड़ जाएगा!''

फिर से मजमा इकट्ठा हो गया।

मारे गुस्से के गायत्री को रोना आ रहा था। इसकी यह मजाल कि अप्पुपन का अपमान कर रहा है?

कुमारन ने भी चिल्लाकर कहा, '' अब तक तमाशा देख रहे थे। चोर पकड़ते तो बनता नहीं, उलटे इन पर ताव दिखा रहे हो? तुम्हारे बाप से भी उमर में बड़े होंगे।''

और लोगों के कंठ स्वर में भी विरोध था,''जो रक्षक, वही भक्षक!''

''खाली पड़ी है कि कहाँ मुँह मारें!''

''ए, शट अप!'' पुलिसवाले ने भी देखा कि मामला बिगड़ चुका है। मारे गुस्से से उसने चोर महाशय को एक तमाचा रसीद किया और गुर्राया, ''भाग बे। वरना...!''

आगे कहने की जरूरत नहीं थी। चोर महाशय के पैरों में पंख लग चुके थे।

सी-26/35-40 ए

राम कटोरा, वाराणसी-221001 (उ.प्र.)

From NBT's Treasure Trove

Yuni and the Ox

O Yong-su

Most people like oxen, but not Yuni. Instead, he much preferred horses. He couldn't bring himself to like oxen. An ox was slow, whereas a horse could be ridden, could be easily led, and could also pull a cart. It was hard to pet an ox because of its horns, and then, too, an ox was always chewing something, acting just like a glutton.

However, in addition to these reasons, something happened one day that made Yuni dislike oxen even more. The small village where he lived had about ten houses, and in front of it there was an open space that all the villagers used for threshing rice. All around were sloping paths and rice paddies, and in the distance there towered a range of mountains. It was only natural that the village children regarded the threshing space as their playground.

It was early spring, the time for plowing the paddy fields. Beside the threshing ground, tied to a weeping-willow tree, there was an ox that was all brown except for black eyes, a black stomach, and black markings on its hoofs. The tips of the willow branches were turning green.

After lunch and a good long nap, Yuni took his ball, which was old and ragged, and went to play on the threshing ground.

The immense, fierce-looking ox took him by surprise. He gave a loud cry, and his eyes grew as big as saucers. For a long time he stood still and stared at the ox, watching its every movement. Every now and then the ox switched its tail to chase away the flies. Even though the animal seemed to be gazing at some blooming peach trees across a valley, it was probably thinking of nothing in particular as it chewed its cud.

As Yuni's fears gradually subsided he became very curious. Step by step he went nearer the ox. All of a sudden the ox turned its head in Yuni's direction. The boy stopped dead in his tracks and put his ball behind his back, feeling sure that the ox was intending to snatch it away from him. Instead, the ox licked its flank several times with its tongue, switched its tail, lowered its eyes, and once again began chewing its cud.

Still holding the ball tightly behind his back, Yuni began to wonder: "Why don't horses have horns? If an ox and a horse got into a fight, I wonder which would win?" No matter how he thought about it, he was sure that the ox would win because of its horns. Yuni liked horses and could not help regretting that the ox would no doubt be the victor.

And it was a mystery to him how the ox seemed to be continually eating something. No matter how closely he watched, he never saw the animal put anything into its mouth, and yet it kept chewing, chewing, chewing.

His curiosity lessened. As he began to lose interest in the ox, he turned around and started to play with his ball, throwing it up in the air and catching it. Then he bounced the ball on the stone walkway, but this time he missed catching it, and the ball rolled directly under the ox.

Chasing the ball, Yuni suddenly found himself within only a few feet of the animal. He didn't know what to do. The ox, with half-shut eyes and chewing its cud, appeared not to notice the ball or even to be concerned by the boy's presence. Yuni felt sure that the ox didn't know his ball had rolled under it.

Yuni decided to try to retrieve the ball before the ox realized what had happened. His eyes fixed on the ox, he carefully inched his way under the animal's stomach. He held his breath and kneeled down. But just as he was about to pick the ball up, the ox suddenly shook its head, making the bells on its halter ring out loudly. At the same time the ox switched its tail.

Yuni shot out from under the ox, tumbling head over heels. Then he leaned backwards on his two clenched fists, stamped his feet, and cried: "Stupid! Stupid!"

As if to show that it did not care, the ox twitched its ears once or twice and again started chewing its cud.

Yuni was upset. He crossed his legs, leaned his chin on his hand, and asked himself: "How can I get my ball back? It isn't his ball, so why won't he let me have it back? Shall I go get a stick? But suppose the ox tries to hide my ball

while I'm looking for a stick? What would I do then?"

The more he thought, the more angry and impatient he became. Yuni peeked at the ox out of the corners of his eyes. The ox was napping. Its eyes were tightly shut, but, oddly enough, it kept on chewing its cud. Yuni felt he shouldn't miss this chance of getting his ball back. Once again he looked at the ox. Without a doubt, the animal was asleep. Kneeling down, Yuni stretched out his hand.

Suddenly, without any warning, the ox switched its tail, hitting Yuni on the cheek. He cried out in pain as he put his hand to his cheek and scrambled out from under the ox. His chest was heaving, and his cheek burned. His mouth turned down at the corners, and he knew that sobs would come if he opened his mouth.

When was it that he had bragged how he could win in a fight with a tiger ? And that time when he had fallen down and cut his elbow, and even though blood was running down arm, he had been able to hold back the tears. But this time was different. He was badly shaking with fright.

Though his eyes filled with tears, he didn't cry. Gradually his fright changed to anger. He stared at the ox with daggers in his eyes, just as though he were about to blindly attack the beast. Then he cried out in a sobbing voice: "Stupid! So you won't give my ball back?"

The ox only kept on chewing.

"It's my ball stupid!" His voice broken by sobs, Yuni clenched his fists in a last attempt to frighten the ox. But, however hard he might try, he knew he was no match for those horns. If only the ox didn't have horns, he might even try to box him.

As though very annoyed, the ox noisily licked its nostrils with its tongue and then again closed its eyes. The red welt on Yuni's left cheek looked like an earthworm. Rubbing it with his hand, he cried out: "I'll go get my father, and then you'll see! He'll take care of you all right!"

Yuni glared once more at the ox, his lips curled. Then he turned and ran home.

His parents were gone when he reached home. The house maid was making a fire under a pot of barley in the kitchen. Yuni kept after her until she came out with him to look for his ball.

By the time they reached the threshing ground, however, the ox was far away a yoke around its neck, plowing a water-filled paddy field with its owner walking behind, urging it on. The threshing ground was bare, the ball nowhere in sight.

(From the NBT Publication
Stories from Asia Today)

जादुई आम

रुचि सिंह

बहुत समय पहले की बात है। नेपाल के सगरमाथा अंचल के गाँव सिरहा के बगीचे में एक बड़े-से आम के पेड़ की सबसे ऊपर की डाली में एक आम फला। वह आम और आम जैसा साधारण नहीं था। वह जादू का अनोखा आम था। पेड़ के सबसे ऊँची टहनी से वह आम बहुत कुछ देखता। दूर-दूर तक फैले पहाड़, गाँव, नदी सब देखता।

एक दिन जादू के आम ने सोचा, 'अब मैं इस पेड़ से उतर बेफिक्र होकर कहीं भी घूमूँगा।' वह जादुई आम इतना भारी था कि अपने-आप पेड़ से नहीं उतर सका।

एक दिन बहुत तेज आँधी-तूफान आया। आम का पेड़ तेज आँधी से कभी दाएँ तो कभी बाएँ डोलने लगा। अचानक जादुई आम पेड़ से जमीन पर गिर पड़ा। आम को कहीं से भी चोट नहीं लगी। कुछ देर तक जादुई आम घास में लोट-पोट करता रहा। घास में लोट-पोट करते हुए जादुई आम को बहुत मजा आया। आम ने सोचा, 'मैं पेड़ से नीचे आ गया! अब मैं पूरा नेपाल घूमने जाऊँगा।'

जादुई आम के पैर नहीं थे। वह लुढ़ककर जाने लगा। जादुई आम पहाड़ से लुढ़कते हुए गाँव की ओर जाने लगा। गाँव के नजदीक उस

आम की मुलाकात एक बंदर से हुई। बंदर ने कहा, ''ऐ आम, रुक-रुक, मैं तुझे खाऊँगा!'' बंदर की बात सुनकर जादुई आम हँसने लगा। हँसते-हँसते आम गीत गाने लगा—

''मैं हूँ जादू का आम, मैं हूँ जादू का आम!

तुम मुझे पकड़ नहीं सकते, मैं घूमूँगा पूरा नेपाल लुढ़कते-लुढ़कते,

मैं हूँ जादू का आम, मैं हूँ जादू का आम!''

इतना कहकर जादू का आम जल्दी-जल्दी लुढ़कते हुए आगे बढ़ने लगा। बंदर भी आम के पीछे-पीछे दौड़ने लगा। रास्ते में एक छोटे-से लड़के ने आम को लुढ़कते देखा तो उसने भी कहा, ''ऐ आम, रुक-रुक, मैं तुझे खाऊँगा।'' जादुई आम ने उसे भी वही गीत गाकर सुना दिया। ''मैं हूँ जादू का आम, तुम मुझे पकड़ नहीं सकते। मैं घूमूँगा लुढ़कते-लुढ़कते पूरा नेपाल!'' बंदर के साथ-साथ छोटा लड़का भी आम के पीछे-पीछे दौड़ने लगा।

आम लुढ़कते-लुढ़कते एक खेत में पहुँचा। खेत पर काम कर रही औरतों ने भी आम को रुकने के लिए कहा। अब तो आम के पीछे सभी दौड़ने लगे। अब जादू का आम छुपने के लिए जगह देखने लगा। आम ने लंबी-लंबी घास देखी। उसी घास में वह आम छुप गया। बंदर, लड़का, औरत—ये सभी आम को खोज नहीं सके और वापस अपने-अपने घर लौट गए। जादू का आम लुढ़कते हुए बहुत थक गया था। वह घास के अंदर ही सो गया। जब जादू का आम सोकर उठा तो धूप खिली हुई थी। खिली धूप जादू के आम को बहुत अच्छी लगी । जादू के आम ने सोचा, अब मैं कुछ दिन यहीं रहूँगा।

काफी दिनों के बाद जादू के आम से हरे-हरे पत्ते, डाली निकलने लगे। अब जादू के आम की एक पेड़ बनने की तैयारी थी। उसने लुढ़कना छोड़ दिया। नेपाल घूमने की इच्छा भी छोड़ दी। समय बीतता रहा। जादू का आम एक बड़े आम के पेड़ में बदल गया। फिर जादू के आम जैसे ही सुंदर और मीठे आम उस पेड़ पर फलने लगे। लोग चाव से उस पेड़ का आम खाने लगे। जादुई आम पेड़ के नीचे से सब देखता और मुस्कुराता।

डी-3/340 जनकपुरी, नई दिल्ली-110058

निर्मला सिंह की दो कविताएँ

किताब

सब चीजों में सबसे प्यारी
होती है किताब।
उलझे-उलझे हर सवाल का
देती है जवाब।
इसको पढ़कर बन जाता है
मूरख भी विद्वान।
अनपढ़ शिक्षित हो जाता है
पा लेता है ज्ञान।
कोई छोटी, कोई मोटी
होती है किताब।
कोई कठिन, तो कोई सरल
होती है किताब।
पढ़ना-पढ़ाना अच्छी आदत
सबसे अच्छा शौक।
अध्ययन से बनते इनसान
इससे न कर खौफ।

संदेश

एक कदम तुम चलो
एक कदम हम।
मंजिलें मिल जाएँगी
कदम चलते-चलते।

एक फूल तुम बनो
एक फूल हम।
बागवाँ खिल जाएँगे
फूल खिलते-खिलते।

एक दीया तुम धरो
एक दीया हम।
अँधेरे मिट जाएँगे
दीए धरते-धरते।

185ए, सिविल लाइंस
बरेली-243001 (उ.प्र.)

सबसे बड़ी आज़ादी

सुरेन्द्र श्रीवास्तव

बहुत समय पहले की बात है। एक जंगल था। उस जंगल में एक भेड़िया रहता था। वह भेड़िया उस जंगल में इधर-उधर घूम-फिरकर अपना भोजन तलाशता था। कभी उसको पर्याप्त भोजन मिल जाता और कई बार भोजन मिलने में मुश्किल होती।

एक बार ऐसा हुआ कि उसे दिनभर खाने को कुछ नहीं मिला। यही नहीं, पिछले दिनों से उसे कम भोजन मिल रहा था, इसलिए शाम होते-होते वह भूख से व्याकुल हो उठा। लेकिन करे क्या? कोई राह नहीं सूझ रही थी उसे। क्या करना चाहिए, यह सवाल मुख्य था उसके सामने।

शाम के बाद रात आई। सारी रात उसने बड़ी बेचैनी में बिताई। भूख के कारण वह कमजोरी भी महसूस कर रहा था।

उस जंगल से एक पगडंडी सीधे शहर की ओर जाती थी। भेड़िए ने सोचा, शहर चलूँ। यहाँ तो हालात खराब हैं। हो सकता है शहर में पेट भरने का कोई रास्ता मिल जाए!

ऐसा विचार कर वह जंगल छोड़कर पगडंडी पर चल दिया कि अब शहर जाकर रहेगा। भेड़िया अपनी धुन में चला जा रहा था। अभी वह कुछ ही दूर गया होगा कि एक मोटे-ताजे शिकारी कुत्ते से उसकी भेंट हो गई। दोनों ने आपस में अभिवादन किया और एक-दूसरे की कुशलक्षेम पूछी। तभी कुत्ते ने भेड़िए से पूछ

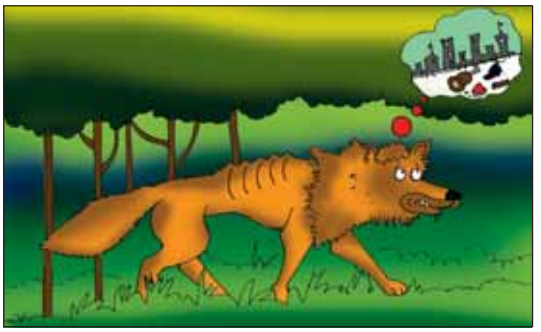

लिया, "अरे भाई, तुम इतने कमजोर क्यों लग रहे हो? क्या बात है? बीमार हो क्या?"

भेड़िए ने मायूसी से बतलाया, "कुछ न पूछो दोस्त। कल दिनभर खाने को कुछ नहीं मिला और पिछले चार दिन से आधा पेट ही खाना मिल सका है। इस प्रकार बड़ी परेशानी है।"

कुत्ते को भेड़िए की बात सुनकर उस पर दया आ गई। वह सहानुभूति जताते हुए बोला, "भेड़िए भाई, मेरी बात मानो, तुम इस जंगल को लात मारो और मेरे साथ शहर चले चलो!"

"उससे क्या होगा?" भेड़िए ने पूछा।

"मैं जिसके घर में रहता हूँ न, वह बहुत अमीर आदमी है। तुम मुझे जो इतना फला-फूला देख रहे हो, यह सब उसकी ही कृपा का फल है।" कुत्ता बता रहा था, "सुबह को बढ़िया नाश्ता, दोपहर को भरपेट भोजन, शाम को मोटर पर सैर और रात को अच्छे खाने के बाद नरम गद्दे पर आराम से सोना। शानदार कोठी और उस पर नौकर-चाकर भी। अब तुम्हीं बताओ,

इससे अधिक और चाहिए भी क्या? सच पूछो तो शहर जाकर तुम्हारी जिंदगी बन जाएगी!''

भेड़िया यह सुनकर अचरज कर रहा था। उसने आश्चर्य से पूछा, ''इतना सब कुछ?... और काम?''

कुत्ते ने कहा, ''काम? अजी काम ही क्या है? मालिक के घर पर पहरा देना। हर नए आदमी को घर में घुसते देखकर भौंक देना, गुर्रा देना। बस, यही काम है।''

यह सुनकर भेड़िया बहुत खुश हुआ और उसने कुत्ते से कहा, ''यार, यह तो बहुत ही मामूली-सा काम है। सच तो यह है कि मैं खुद भी जंगल में गँवारों की तरह रहने, शिकार के लिए धक्के खाने और दिनभर सिर छिपाए पड़े रहने से तंग आ गया हूँ। मेहरबानी करके तुम मुझे इस नरक से छुटकारा दिला दो। मैं तुम्हारा अहसान जिंदगीभर नहीं भूलूँगा।''

कुत्ते ने कहा, ''काम तो जरा मुश्किल है। खैर, तुम मेरे साथ चलो। मैं कुछ-न-कुछ उपाय तो अवश्य ही करूँगा।''

इसके बाद कुत्ता और भेड़िया, शहर की ओर चल दिए। अभी वे कुछ ही दूर गए होंगे कि अचानक भेड़िए की नज़र कुत्ते की गरदन पर पड़ी। उसने देखा कि कुत्ते के गले में सुनहरे रंग का कंठा-सा कुछ पड़ा है। भेड़िए ने यह देखकर अचंभा करते हुए कुत्ते से पूछा, ''दोस्त, तुम यह गले में कंठा जैसा क्या पहने हुए हो?''

कुत्ते ने बतलाया, ''यह कंठा नहीं है। इसे पट्टा कहते हैं।''

''पट्टा? यह क्या होता है? और तुम इसे क्यों पहने हुए हो?'' भेड़िए ने एक साथ कई सवाल कुत्ते से कर दिए।

''इसमें जंजीर बाँधी जाती है।'' कुत्ते का जवाब था।

''वो क्यों भला?'' भेड़िए ने अगला प्रश्न किया।

कुत्ते का उत्तर था, ''इसलिए कि मैं कहीं भाग न जाऊँ।''

भेड़िए को यह सुनते ही क्रोध आ गया। गुस्से से वह थरथराने लगा और बिगड़कर कुत्ते से बोला, ''किसी की गुलामी मैं नहीं कर सकता। अपनी मर्जी से घूमना-फिरना पसंद है मुझे। मैं आजादी की जिंदगी बसर करता हूँ। भाई, तुम अपने मालिक के घर जाओ। मैं तुम्हारे साथ शहर नहीं जा सकता।''

कुत्ते ने उसे समझाने की काफी कोशिश की, किंतु भेड़िए ने उसकी बात न मानी और वापस जंगल की ओर चल दिया।

सचमुच, आजादी से बढ़कर कुछ नहीं होता।

सी-1/62, विशेषखंड
गोमती नगर, लखनऊ-226010 (उ.प्र.)

Disastrous Decision

Srihari Nayak

There was a rich man in a village. The main occupation and source of income, in those days, was from agriculture. So people having landed properties were regarded as rich.

The rich man was an employee of the king's administration because he had knowledge of maintaining account books. Having the good will of the king, he was a respectable man in the village.

Most of the villagers were either marginal farmers or agricultural labourers. All them had to live in hand to mouth condition. Many of them were bound to sell their cultivable land to manage their family expenses and to meet other unavoidable expenses like marriage of their sons and daughters or funeral rites of parents or family members.

The rich man did not face financial problems as he was getting monthly salary from the king's office. So he was in an advantageous position to purchase land. He had only one son. He took great care of him. There was no school nearby. The rich man did not send him to school nor did he arrange a teacher to teach him at his home.

The boy spent his time playing with friends, visiting fairs, operas and pujas etc. in the neighbourhood villages. The

rich man became worried for the future of his only son. So he purchased 365 acres of land thinking that his son would be able to live comfortably by spending the income generated from the land throughout the year.

Time rolled on. The rich man died. His son had no idea how to look after the income derived from cultivation. He had also no knowledge of fruitfully spending the money. With the result of these managerial lapses, income gradually lessened and the time came when he was forced to sell his property.

Gradually all his landed property was sold. He became a pauper. He could not do anything. He had no idea of what to do or how to do.

Some of his friends advised him to dig the floor of the pucca building hoping that his father might have stored valuable articles and money under it. In those days rich people used to keep their valuables in metal boxes or earthen pitchers under the floor.

He believed the suggestions of his friends. As he was foolish, he did not think that if this had been the case, his father would have told his only son before he died.

He started digging the floor at night to hide the fact from others. He dug the floors of all rooms. Nothing could be found. Result was that the foundation of walls became loose and weak and collapsed.

Now there was not only staggering poverty but also no home to stay. He somehow made a hut with bamboo sticks and straw and stayed there. His wife with his children left the place to stay with her parents.

D-I-61, Kaka Nagar, New Delhi-110003

नींद उड़ गई

दर्शन सिंह आशट

सोच रहा था गधा एक दिन
‘‘मैं मुंबई जाऊँ।
काम करूँ फिल्मों में
अच्छा-खासा कमाऊँ।
टाई बाँधकर, जब आँखों पर
चश्मा नया लगाया
सोचेंगे ‘सलमान’, ये ‘अपटू डेट’
कहाँ से आया?
‘आमिर खाँ’ क्या, ‘सनी’-‘अक्षय’
भरेंगे मेरा पानी।
फिल्म इंडस्ट्री मुंबई में
न होगा मेरा सानी।’’
तभी अचानक डंडा बरसा
मालिक ने उसे जगाया।
नींद उड़ गई ढेंचू जी की
और भट्ठे पर पाया।

ई-टाइप, पंजाबी यूनिवर्सिटी कैंपस
पटियाला-147001 (पंजाब)

चित्र पहेली

नीचे दी गई पहेली में 16 चित्र छिपे हुए हैं। इन्हें ध्यान से देखिए। अपनी डायरी या अभ्यास पुस्तिका में उनके नाम लिखिए। एक चित्र का नाम लिखने पर एक अंक दिया जाएगा।

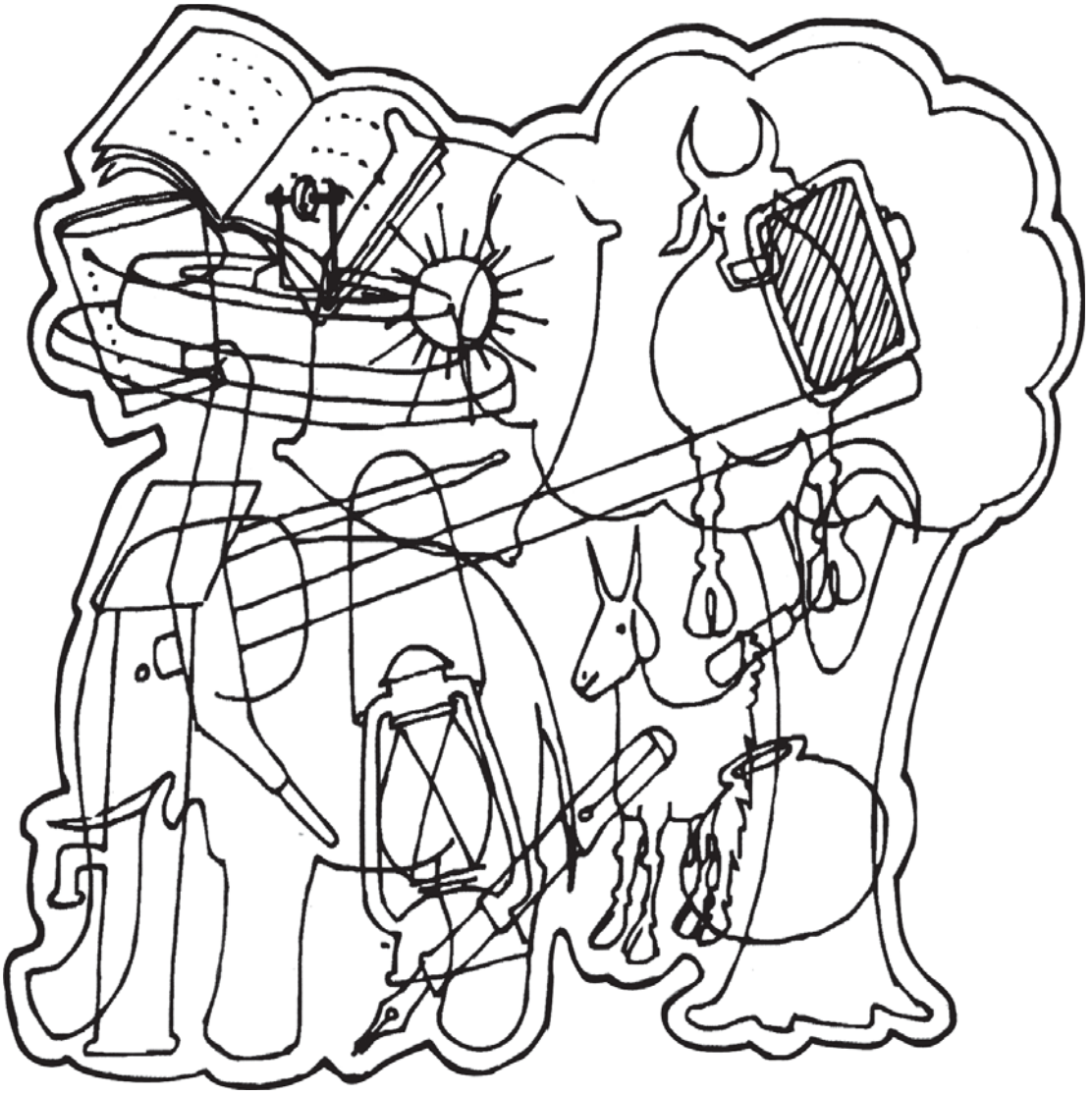

राज्य संसाधन केंद्र, प्रौढ़ शिक्षा, इंदौर, म.प्र. से साभार

बूझो तो जानें

मधु पंत, धर्म प्रकाश

देखा, राजा, सात रानियाँ
जब मैं जाता दिल्ली।
हर रानी की सात लड़कियाँ
लिए हुए थीं बिल्ली।
हर लड़की की सात बिल्लियाँ
हर बिल्ली के बच्चे सात।
कितने जन जाते थे दिल्ली?
बोलो! तभी बनेगी बात।

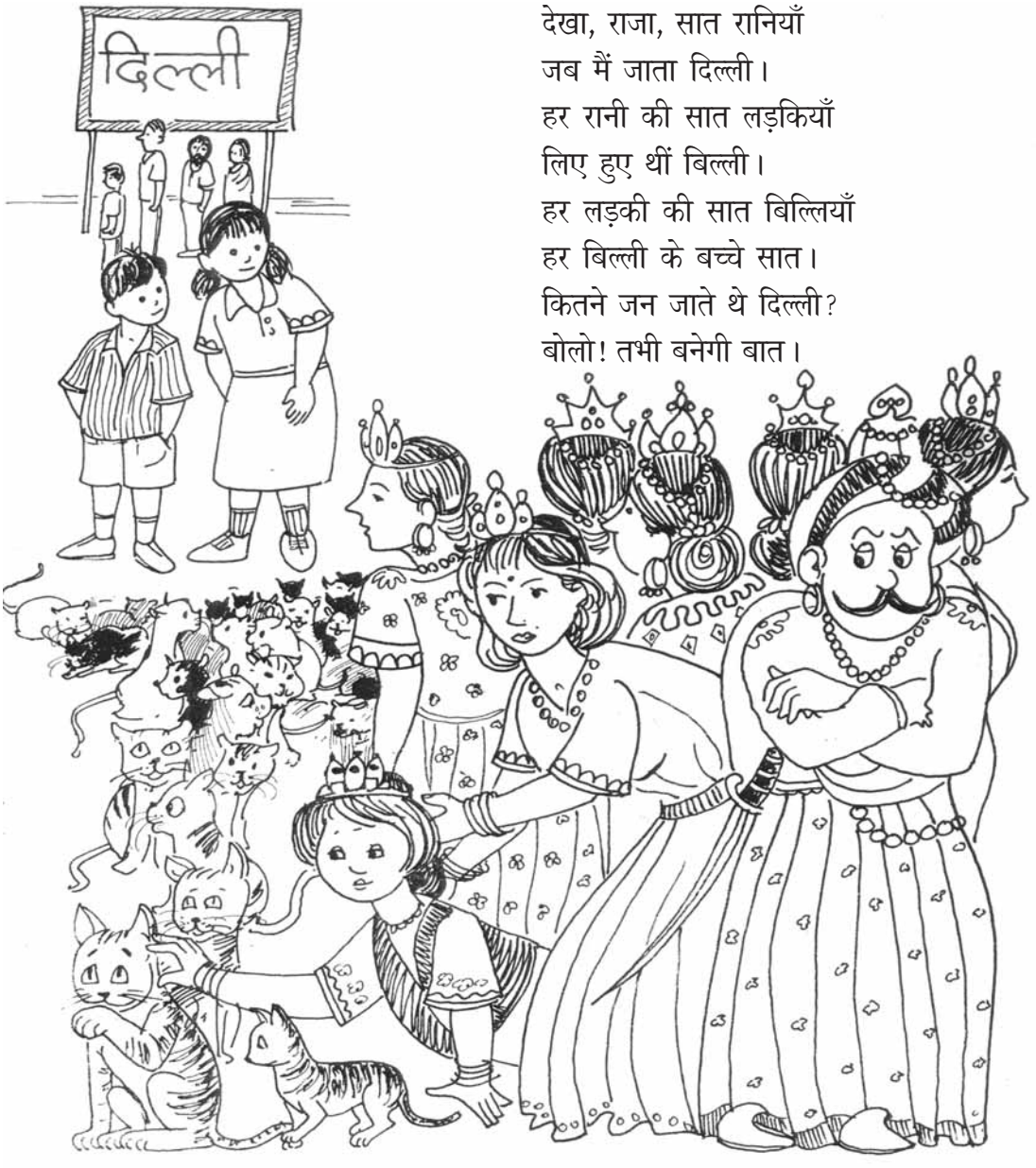

'बूझो तो जानें' शीर्षक पुस्तक से साभार

Burn the Evils

Shashi Jain

Children of Gyandeep were celebrating Dussehra festival in their school. They had made an effigy of Ravan themselves. Today, they were going to burn it.

Teacher told the children, "We celebrate Dussehra on this day as Ram, the King of Ayodhya had killed Ravan, the King of Lanka. It was a victory of good over evil. So, on this day we burn the evils or Ravan. Today we will also burn our evils with Ravan..."

Children were confused and did not understand what to do.

Their teacher explained, "All of you mention one by one whichever bad habit you want to leave. For example—shouting, fighting, pushing etc."

Some of them said, "They will not shout!" But they were still shouting.

Some said that they will not push each other, but were already pushing each other.

They were just saying things like – they will not abuse, they will not take others things without asking, yet they were behaving in the same manner.

Teacher interrupted and said, "Look, this is a magic paper bag in my hand. Make a queue. I will come to you one by one. You can tell this bag the bad habits you wish to burn today. Start like this… Choo… Choo…"

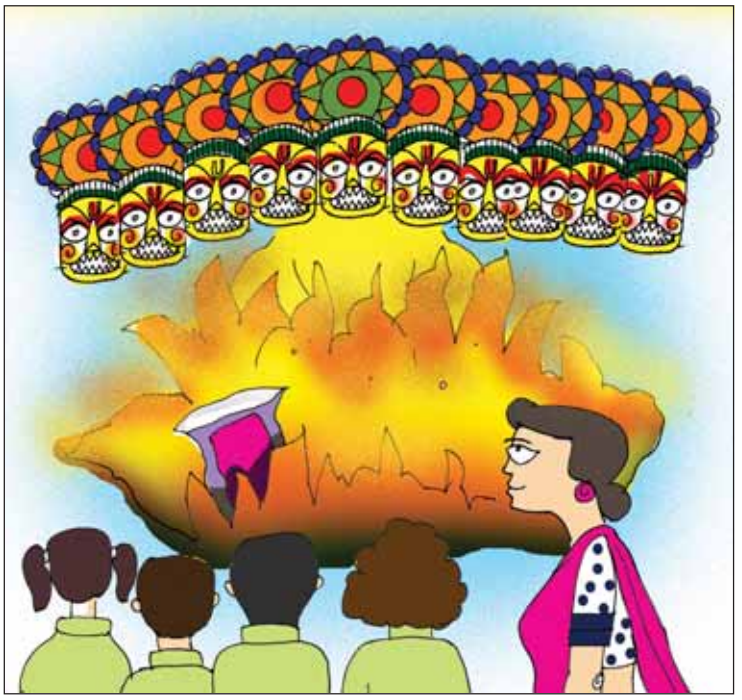

Komal said, "Choo... Choo… I will not pull hair of my younger sister."

Raunak said, "Choo… Choo… I will not eat toffees in the class."

Savita said, "Choo…Choo… I will not laugh unnecessarily."

Kajal said, "Choo…Choo... I will not pinch."

Rajesh said, "Choo…Choo... I will not abuse."

Lalit said, "Choo…Choo... I will try to leave my bad habits."

Children enjoyed,"Choo… Choo…" They were not hiding anything.

When every child had spoken, the teacher tied the paper bag with a ribbon.

She said little loudly, "Choo… Choo… Today we are going to burn all our evils with Ravan."

Then she took three rounds around Ravan's effigy. All children followed their teacher.

She put the bag near the effigy and set it on the fire...

Ravan got burnt with all the evils of children.

The children enjoyed the burning of effigy and took packets of snacks and left.

Next day was the holiday for Dussehra and the day after the festival Gyandeep reopened. The teacher was happy to notice a slight change in children. They were not shouting…

shashi_njain@yahoo.com

छूट गई शैतानी

डॉ. सुनील कुमार 'सुमन'

चंपक वन में एक बंदर रहता था। बड़ा ही नटखट। नाम था उसका श्यामू। उसके जैसा शैतान पूरे चंपक वन में कोई नहीं था। उसका दिमाग हमेशा नई-नई शैतानियों से भरा रहता था। हर समय किसी-न-किसी को तंग करना ही उसका काम था। चंपक वन के सारे पशु-पक्षी श्यामू से परेशान रहते थे।

एक बार चंपक वन में लगातार चार दिनों तक खूब बारिश हुई। छोटे-बड़े सभी गड्ढे पानी से भर गए। नदी में भी पानी उमड़ आया। पशु-पक्षियों के बच्चे बेहद खुश थे। बरसात के गड्ढे उनके लिए तालाब बन गए थे। वे उनमें खूब उछल-कूद करते। पानी के साथ खेलने में उन्हें बड़ा मजा आता था।

एक दिन सुबह-सुबह ही सारे बच्चे पानी में ऊधम मचा रहे थे। यह खेल अभी चल ही रहा था कि चीनू गिलहरी एकाएक चीखी। सभी सहम गए, क्योंकि सामने से श्यामू बंदर मस्ती में झूमते हुए चला आ रहा था। उसके हाथ में एक डंडा था। डंडे से वह छोटे-छोटे पौधों और पत्तियों को मारता-तोड़ता आ रहा था।

आखिर वही हुआ जिसका डर था। पास आते ही श्यामू कीचड़ उठा-उठाकर सबके ऊपर फेंकने लगा। मीनू हिरन ने इसका विरोध किया। इस पर उसने हँसते हुए कहा, ''अरे बेवकूफ, तुम सब नहा ही तो रहे हो, थोड़ा कीचड़ लग भी गया तो क्या हुआ, फिर नहा लेना!'' इसके बाद वह पानी उछालने लगा। कभी किसी बच्चे को गड्ढे में धकेलकर हँसने लगता तो कभी खुद पानी में कूदकर ऊधम मचाता। इतनी देर में ही उसने बच्चों की नाक में दम कर दिया। तभी उसकी नज़र बहती नदी की ओर गई। वह बच्चों को वहीं छोड़ नदी की ओर चल पड़ा। श्यामू को जाते देख नंदू खरगोश कान खड़े करके बोला,

''भैया श्यामू, कहाँ चले? रोज़-रोज़ तो तुम खूब मज़े में नदी में डुबकियाँ लगाते थे, पर अब तुम कैसे नहाओगे? नदी की धारा बहुत तेज है। पलक झपकते ही तुम उसमें बह जाओगे!''

''तो क्या हुआ? अरे डरपोक, तुमने मेरी तैराकी का कमाल अभी देखा ही कहाँ है!'' श्यामू ने चलते-चलते कहा और आगे बढ़ गया।

तभी बिल्लू कबूतर चिल्लाया, ''श्यामू, तुम डूब सकते हो! अपनी जान की तो चिंता करो!'' इस पर श्यामू ने चिल्लाकर कहा, ''मैं बहादुर हूँ, बहादुर! तुमलोगों की तरह डरपोक नहीं!'' यह कहते हुए वह नदी में कूद गया और डुबकियाँ लगाने लगा। बच्चों ने लाख मना किया, पर उसने किसी की एक न सुनी। अब नदी में भी उसने अपनी शरारत शुरू कर दी। कभी सीधा तैरता तो कभी उलटा। वह तरह-तरह

के करतब दिखा रहा था। अचानक पानी का बहाव तेज हो गया। श्यामू उसमें ऊपर-नीचे होने लगा। उसे लगा कि वह पानी के साथ बहा जा रहा है। अपनी जान को खतरे में देख वह जोर-जोर से चिल्लाने लगा। यह देखकर सारे बच्चे काँप उठे। कुछ अपने घरों की ओर दौड़ पड़े। कुछ वहीं किनारे खड़े होकर चिल्लाने लगे।

कुछ ही देर में श्यामू के माता-पिता वहाँ आ गए। साथ में चंपक वन के राजा शेर सिंह और ढेर सारे जानवर भी थे। श्यामू की हालत देख वे सब सन्न रह गए। तत्काल बंटू कुत्ता नदी में कूद पड़ा। साथ में भोला सुअर भी था। दोनों ने श्यामू को खींचकर बाहर निकाला। तब तक वह बेहोश हो चुका था। श्यामू के पेट में पानी भर गया था। तुरंत उसके पेट का पानी बाहर निकाला गया। थोड़ी देर बाद उसे होश आ गया। लेकिन आँखें खोलते ही वह सिसकने लगा। उस समय उसे घोर पश्चाताप हो रहा था। बच्चों की आँखें भी भर आई थीं। श्यामू ने मन-ही-मन शैतानी से तौबा करने की कसम खा ली और उठकर बच्चों से लिपट गया।

असिस्टेंट प्रोफेसर, साहित्य विभाग
महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय
वर्धा-442001 (महाराष्ट्र)

देखा एक खिलौना जी

ओमप्रकाश शास्त्री

देखा एक खिलौना जी
वह था खूब सलोना जी।

मीठा बोले मिसरी-सा
माथे एक डिठौना जी।

टॉफी बाँटे बच्चों को
हाथ उठाए दोना जी।

हँसता और हँसाता
जोकर था वह बौना जी।

रोज सवेरे उठना तुम
रात में जल्दी सोना जी।

प्यार-मुहब्बत की खातिर
दिल में हो इक कोना जी।

करो मेहनत, सफल बनो
किस्मत को क्या रोना जी!

राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
ग्राम एवं डाक-पाड़ला
जिला-कैथल (हरियाणा)

The Winner

Avril Dsouza

David pushed the door of his house open and burst in, "Father," he cried out, "I have killed a lion and a bear as well, with my sling."

His father only smiled. But his brother laughed and asked,"David, how huge is your imagination?"

"But I did, I really did," argued David.

His brother looked deep into David's eyes. He saw how good David looked even though he was still a boy and was only a shepherd looking after the familysheep. Yet a bigger surprise awaited him! When he went to the hills to see if there was any truth in what David said, he saw the lion and the bear killed with the shot from David's sling.

David was the youngest of Jesse's sons. He was a natural harpist. He loved his harp because it kept him from getting lonely. Grazing sheep without any companion sometimes made him lonely. David had another strength. He was perfect with his sling shot. Every time he picked up a stone and fitted it in his sling, he was dead sure that his aim would be true. One day King Saul of Gibeah was weary with his anxieties and wished to change court musician. Word was sent to Jesse, the father of David.

"David," his father said to him. "Our king is weary and sick at heart. He has heard about your songs and how well you play your little harp. You will have to go to the palace in Gibeah."

The boy's eyes lit up. David always welcomed any excitement in his otherwise simple life.

David not only found a place in the king's court, he even charmed his way into King Saul's heart. King Saul had no

other illness but a nagging fear that kept eating his soul. David clutched his harp and sang from his soul.

He sang songs about their godly ancestors, about battles and victories and God's generous heart.

In a few days, David's songs and the amusing words which flowed so easily from David's mouth, restored hope in King Saul's heart and healed his mind.

After sometime, David was back home in Bethlehem. He missed the palace. Now he clutched his harp and sang his songs for his sheep. He loved grazing his sheep because he knew that it was his duty towards his father.

Not long afterwards, David's brothers were summoned to enroll in the king's army. David was alone with his parents. David wished with all his heart to go too; but he was too young.

One morning, a giant sized soldier, named Goliath, from King Saul's enemy camp, challenged King Saul's army. So huge and fierce was he that King Saul did not permit any of his soldiers to meet the challenge.

"If Goliath slays the best of our soldiers, we will definitely be defeated in the war," the king said.

That morning Jesse sent David to bring news about his brothers, since he had no word from them. Just as David reached the enemy camp, Goliath was roaring out his challenge, "Send me a man from your camp to fight with me before we get into the battle."

Goliath's voice, his wild eyes and his heavy body stirred something within David's heart. 'You can fight with him David,' a voice within him whispered. It was a silent powerful whisper. David remembered he had heard that voice on the day he had killed the lion who had grabbed his lamb.

No soldier would move without the king's permission. "I can fight this giant, your majesty," declared David.

King Saul looked at David, "You do not know what you talk," he said. Yet he saw a strange light shining out of the boy's eyes. He remembered how David had drawn him out of the trap of fear and confusion with his songs. " Go and God be with you," he said, all of a sudden.

Goliath stared at David. His fellow soldiers stared at David as well. "He's only a teenager," Goliath growled. "Are they mocking me?" he shouted.

David had refused the armour which King Saul had kept for him because it was too big and heavy. So also were the weapons. He had come in his shepherd's clothes with his only sling and a pouch full of pebbles from the stream.

"Come," screamed Goliath. "In a moment I will feed your flesh to the fowls and the beasts."

David felt himself filling with something mightier than the wind that filled his mind with the songs which he sang. "Goliath, I have no spear and shield but the power and the presence of our mighty God is within me. Our God never loses any battle," replied David.

Goliath pushed his helmet back to mop the sweat from his brow. In that moment, David slipped a stone in his sling and swung it. Even as Goliath puzzled over his action, the stone, whizzed through the air and struck Goliath, between his eyes.

Goliath reeled and fell to the ground, stunned from the blow. David sprang upon the giant's chest and grabbed his sword. Swiftly and surely, he pierced Goliath with the sword. Goliath lay lifeless, dead.

Cheers filled the air. "David, David, David," they shouted.

"Not I, said David, "but the Almighty Power within me."

St. Xavier's High School
Camp Belgaum
(Karnataka)

लकड़हारे का अच्छा काम

निकिता

एक लकड़हारा था। वह बहुत गरीब था। वह एक झोपड़ी में अपनी पत्नी के साथ रह कर जैसे-तैसे गुजारा करता था।

लकड़हारे की कमाई सिर्फ उतनी ही हो पाती थी कि वे लोग दिन में एक बार का खाना खा पाएँ। तकनीकी विकास और गैस के आगमन के बाद से लकड़ी की बिक्री कम होती जा रही थी। घरों में गैस के अलावा बिजली के उपकरण भी खाना बनाने के लिए इस्तेमाल हो रहे थे।

किंतु लकड़हारे के पास लकड़ी बेचकर धन कमाने के अलावा और कोई उपाय नहीं था। ऐसे में जब वह काम ढूँढ़ने के लिए निकला तो बड़ी मुश्किल से उसे शाम तक एक काम मिल पाया, उसे एक आदमी ने अपने खेत में हल चलाने के लिए रख लिया।

उस लकड़हारे को काफी समय निकल गए वहाँ काम करते-करते। एक दिन उसने अपने मालिक की किसी से की जा रही एक हैरान करने वाली बात सुनी। उनकी बातों से यह लग रहा था कि वह उस गाँव के सबसे अमीर आदमी का खून करके उसका घर लूटने वाला है । यह सुनकर वह घबरा गया। उसने उसे पकड़वाने की सोची। फिर उसने सोचा कि जिस आदमी ने उसे रोटी दिया, काम दिया, उसके साथ वह ऐसा कैसे कर सकता है! पर यह आदमी तो किसी का खून करने की सोच रहा है! यह तो एक बड़ा अपराध है!

उसने सोचा कि उसे उस आदमी की जान बचानी चाहिए।

शाम को वह अमीर आदमी के घर गया और उसे सब कुछ बता दिया। अमीर ने यह बात पुलिस को बता दी।

दूसरे दिन, योजना के अनुसार शाम को जब वे डाकू आने वाले थे पहले से चौकन्नी पुलिस ने मौका देखकर उन्हें पकड़ लिया। पुलिस ने लकड़हारे को सरकार की तरफ से नगद ईनाम दिया और अमीर आदमी ने भी उसे एक छोटी-मोटी नौकरी दे दी।

लकड़हारे की जरा-सी सतर्कता और ईमानदारी ने एक बेकसूर की जान बचा ली और अपराधी भी पकड़े गए। इतना ही नहीं, इससे लकड़हारे को भी कई तरह के लाभ मिले।

केंद्रीय विद्यालय
मेघाटुबुरू (ओडिशा)

My Page

When Kangaroo Meets Aliens!

Farhan

Once there was a little Kangaroo who was hopping and playing about. While he was hopping and playing he hit the child of the king by mistake. Crying, the child went to his father and told him what had happened. The king got very angry and cursed the Kangaroo that he will not be able to hop again and he went away with his son.

Kangaroo was very sad that he won't be able to hop and play again. He wanted to go to the king and tell him that all this happended by mistake.

He started his journey to the king's palace. When he reached there he saw that the king's palace was in the middle of the lake. He saw a boat and jumped into it.

When he was about to reach the king's palace, a big wave came and hit the boat which caused the boat to drift to another land. That land was the land of nightmare.

He looked around and saw a giant rock. If another wave hit the boat then the boat would crash against the rock and he would surely die. So he thought of getting out of the boat.

He got out and tied the boat with a rope to the big rock. When he was exploring the land he saw a huge alien guarding the land.

The alien said, "I am Scosh Scosh!" How dare you enter the land of nightmare? The alien tried to hit the little Kangaroo with his electricity. Little Kangaroo dodged him and ran away and hid behind the rock.

He started thinking how to defeat the alien. He thought that he can defeat the alien by controlling electricity. He can try this by putting some water on the

alien. He then went back to his boat and pushed the boat from inside to tilt it.

Once the boat tilted, he bravely went outside and filled some water in his pouch and again jumped inside the boat as quickly as he could. He tilted the boat once more and jumped out and headed towards the alien again.

When the alien saw him again he tried to shock him by throwing electricity at him. Little Kangaroo dodged him and quickly reached behind the alien and poured water on the alien.

Kangaroo noticed that there was a weird belt with buttons on the hand of the alien. When he pushed one of the buttons, the belt came off the wrist of the alien and got fixed on the Kangaroo's hand.

Kangaroo was surprised at this. He decided to try the belt. He did the same action what the alien had done before to shock him. When he did that he realized that he now has the capability to control electricity. He continued his journey in the land of nightmare.

When he went further he saw another alien. His name was Heat Blast. The alien tried to burn him but Kangaroo poured the remaining water in his pouch on him. The alien fell down and then suddenly the light hit the Kangaroo's watch.

Kangaroo thought that this must be the sign that he has got the power of the Heat Blast too. He thought that as it is difficult to defeat these aliens without water how could he go again and again to river to get the water. He saw a pot there. He decided to use it to collect the water.

Tying the pot with rope he threw it into the lake. He pulled it back. He did not know how he would carry this huge pot. So he put the pot in the boat and tied the boat with rope and started pulling the boat.

He met another alien who was flying in the air. He said, "My name is Ultimate Big Gel! I will freeze you to death."

Kangaroo quickly used Heat Blast's power against the Big Gel's power. Soon the Big Gel's power ran out and he could not use his freezing power anymore. He could use it only after an hour.

Kangaroo noticed this and attacked Big Gel with Heat Blast's power. Big Gel fell down and again a ray of light hit the Kangaroo's watch and he understood that this time also he has got the alien's power.

He continued his journey and on the way met another alien who was short in height. The alien said, "My name is Echo Echo." He doubled himself by using his power. Echo Echo then screamed with his supersonic power.

The little Kangaroo did not like the noise and put cotton ball in his ears which he was carrying to play. Echo Echo was surprised at this as nobody was so far been able to tolerate the noise made by him.

Kangaroo used the power of Big Gel power to freeze Echo Echo. As soon as Echo Echo was frozen all his clones got frozen. Then he used Scosh Scosh power to shock him and Echo Echo died of shock.

The moment the alien fell down, the same thing happened which was happening with the fall of each alien. A light struck and he got the power of Echo Echo.

He met one more alien. The alien said, "I am Goof! I will not spare you." He tried to throw his power on Kangaroo. The little Kangaroo dodged himself and used power of Scosh Scosh to defeat him. Again the light struck and he got the power of Goof.

Kangaroo again continued his journey and found another alien. This alien's name was Energy.

Energy said, "I will melt you by my heat." The little Kangaroo again used water in his pouch to defeat Energy. The alien fell down and his power also now belonged to the little Kangaroo.

He continued his journey and met another alien called Feedback. This alien had the ablity to absorb any kind of energy. Kangaroo used his creativity and found out the way to defeat him. He used Goof's power to go inside the body of Feedback and control his body. He made Feedback jump and fell down on his head. This caused Feedback to die and he now got the power of Feedback.

He saw that the king's palace was not quite faraway. He again tilted the boat and jumped inside the boat to reach palace. The king was very kind. He accepted the apology of the Kangaroo and gave him back his ability to hop. Kangaroo hopped from the king's palace to his forest. He was happy that he can hop and play again.

Delhi Public School
Vasant Vihar, New Delhi-70

My Page

The World in Diamond

Arjun D. Chowdhury

A boy named Rahul went to a shop to buy his favourite potato chips. He saw something lying on the ground, when he went near it he saw it was a diamond. He was very happy when he saw it, but something was written on it. When he read it, he went inside the diamond!

When he regained his consciousness he saw a river and a very large forest around him and a small house of a witch on a tree top. After walking for a while he saw that three children were hiding behind a tree. Their names were Nikhil, Pinki and Bablu. They told Rahul about the world of diamond. They told him that they also read the words written on the diamond and were suddenly trapped inside the diamond.

They told him that the witch has kept a precious ruby in her drawer. If they will break the ruby they will get freedom from the world of diamond.

All of them made a plan. Rahul's friends knew that the witch has a dog for her protection. They went to the forest in search of bones.

At night they climbed the tree and saw that the dog was sitting at the entrance of the witch's house. Pinki showed the bone to the dog and threw it towards the forest and the dog ran to get hold of the bone.

They entered the house to find the ruby. The witch was sleeping. Near her bed there was a drawer. The ruby was kept inside the drawer. They took the ruby and broke it into pieces and they all came out of the diamond.

After coming out of the diamond, they all were very happy and decided to break the diamond so that no other child ever get trapped in the diamond like them.

St. Mary's Public School
Neb Sarai, New Delhi-68

खुद करके देखो

घरेलू सामान से अदृश्य लिखाई

आइवर यूशिएल

तमाशे के लिए जरूरी सामान :

नींबू या संतरे का रस, सिरका, दूध, नमक, कपड़े धोने वाला सोडा, खाने वाला सोडा, एप्सम साल्ट, चीनी, अमोनियम क्लोराइड, आयरन सल्फ़ेट।

तमाशे की तैयारी :

ऊपर लिखे सामान में जरूरी नहीं है कि सब चीजें मिलें तभी तुम्हारा यह खेल शुरू हो। जो भी मिल जाए, बस उसी से शुरू कर दो अपना काम।

काम भी क्या है? कि सिर्फ इतना ही कि ऊपर बताई गई जो-जो चीजें ठोस रूप में हैं उन्हें पानी में घोलना होगा तुम्हें और द्रव रूप में मौजूद चीजों को तो सीधे तौर पर ही काम में लाया जा सकता है।

अब देखो तमाशा :

ऊपर बताए गए द्रवों या ठोस पदार्थों के अलग-अलग तैयार किए गए घोल में से किसी भी एक को स्याही की तरह उपयोग में लाकर तुम इस लिखाई से कोई भी गुप्त संदेश अपने किसी मित्र आदि को लिख सकते हो। लिखने के लिए होल्डर, पंख या तिनकी आदि कोई भी चीज ली जा सकती है, पर हाँ, इस स्याही को

सूखने में जरूर कुछ समय लग जाएगा। अतः सब्र से काम लेना, क्योंकि सूखने के बाद ही यह पूरी तरह अदृश्य होगी।

अदृश्य लिखाई लिख तो डाली तुमने सफलतापूर्वक, परंतु अब इसे फिर से पढ़ने लायक कैसे बनाओगे यह भी जान लो और इसके लिए कोई बहुत लंबी-चौड़ी तरकीब नहीं है यह ध्यान रखना। बस, कागज को आँच के पास लाकर थोड़ी-सी गरमी पहुँचानी है, या ऐसा भी कर सकते हो कि कागज के ऊपर तुम गर्म इस्त्री ही फेर दो सीधे-सीधे।

क्यों, कैसा रहा अदृश्य लिखाई वाला यह खेल-तमाशा?

सी-203, कृष्णा काउंटी
रामपुर नैनीताल, मिनी बाईपास
बरेली-243122 (उ.प्र.)

मछली

प्रकाश 'सूना'

पानी में सो जाती मछली
सपनों में खो जाती मछली।

रंग-बिरंगी इसकी काया
सबके मन को भाती मछली।

इसको तुम ना हाथ लगाना
छूने से डर जाती मछली।

जब भी देखो चलती रहती
ना थकती, घबराती मछली।

बिन पानी है जीवन 'सूना'
हमको यह समझाती मछली।

मुरलीधर सदन, 187-बी,
गाँधी कॉलोनी (निकट गाँधी वाटिका)
मुजफ्फरनगर-251001 (उ.प्र.)

Statement on Ownership of the Journal

Readers' Club Bulletin

Form IV
(See Rule 8)

Place of Publication	: New Delhi
Periodicity of Publication	: Monthly
Printer's Name	: Satish Kumar
Whether Citizen of India	: Yes
Address	: Nehru Bhawan, 5, Institutional Area, Phase II Vasant Kunj, N.D.-110070
Editor's Name:	: Manas Ranjan Mahapatra
Whether Citizen of India	: Yes
Address	: Nehru Bhawan, 5, Institutional Area, Phase II Vasant Kunj, N.D.-110070
Name and addresss of individuals who own the newspaper and partners or shareholders of more than one per cent of the total capital	: National Book Trust, India, 5, Institutional Area, Phase II Vasant Kunj, N.D.-110070

I, Satish Kumar, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Satish Kumar
(Signature of Publisher)

Dated : 1-4-2014

छोटे जीवों से जान-पहचान
कालूराम शर्मा
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
पृ.72 ₹95.00

छोटे जीवों से जान-पहचान

रोजमर्रा की जिंदगी में अपने आसपास की दुनिया में नन्हे-नन्हे जीव-जंतुओं को देखना बड़ा रोमांचकारी होता है। इनमें से अनेक हमारे जाने-पहचाने होते हैं। प्रस्तुत पुस्तक में ऐसे ही कुछ जीव-जंतुओं को आधार बनाया गया है, जो कहीं उड़ते, रेंगते, सुस्ताते, खाते, शिकार करते, अपने अंडों-बच्चों की निगरानी करते या अपनी सुरक्षा करते जैसे क्रियाकलापों में व्यस्त देखे जा सकते हैं। पुस्तक का ढाँचा कुछ इस प्रकार रखा गया है कि बच्चे अपने आसपास के जीव-जंतुओं के क्रियाकलापों का अवलोकन करने हेतु प्रेरित हो सकें।

किस्सा एक मोटी परी का

प्रस्तुत बाल कहानी संग्रह में शीर्षक कहानी समेत कुल 20 कहानियाँ हैं। सभी कहानी एक से बढ़कर एक, रसपूर्ण और मजेदार। पुस्तक की 'कितनी सुंदर है यह धरती', 'किस्सा परी और पवन चक्की का', 'किस्सा एक मोटी परी का' कहानियों में खुशदिल परियों की उपस्थिति सबको लुभा लेती है। इसलिए भी कि ये परियाँ कुछ निराली ही हैं, जिन्हें धरती की सुंदरता और यहाँ के सीधे-सरल इनसानों से बेइंतहा प्यार है।

किस्सा एक मोटी परी का
प्रकाश मनु
ग्रन्थ अकादमी, दिल्ली
पृ.144 ₹200.00

R.N.I. No. -64771/96 Postal Regd. No-DL-SW-1-4066/2012-14
Licenced to post without prepayment, L. No. U (SW) 24/2012-14 Mailing Date :. 20/21 Same Month
Date of Publication: 14 /04/2014

HELP !!

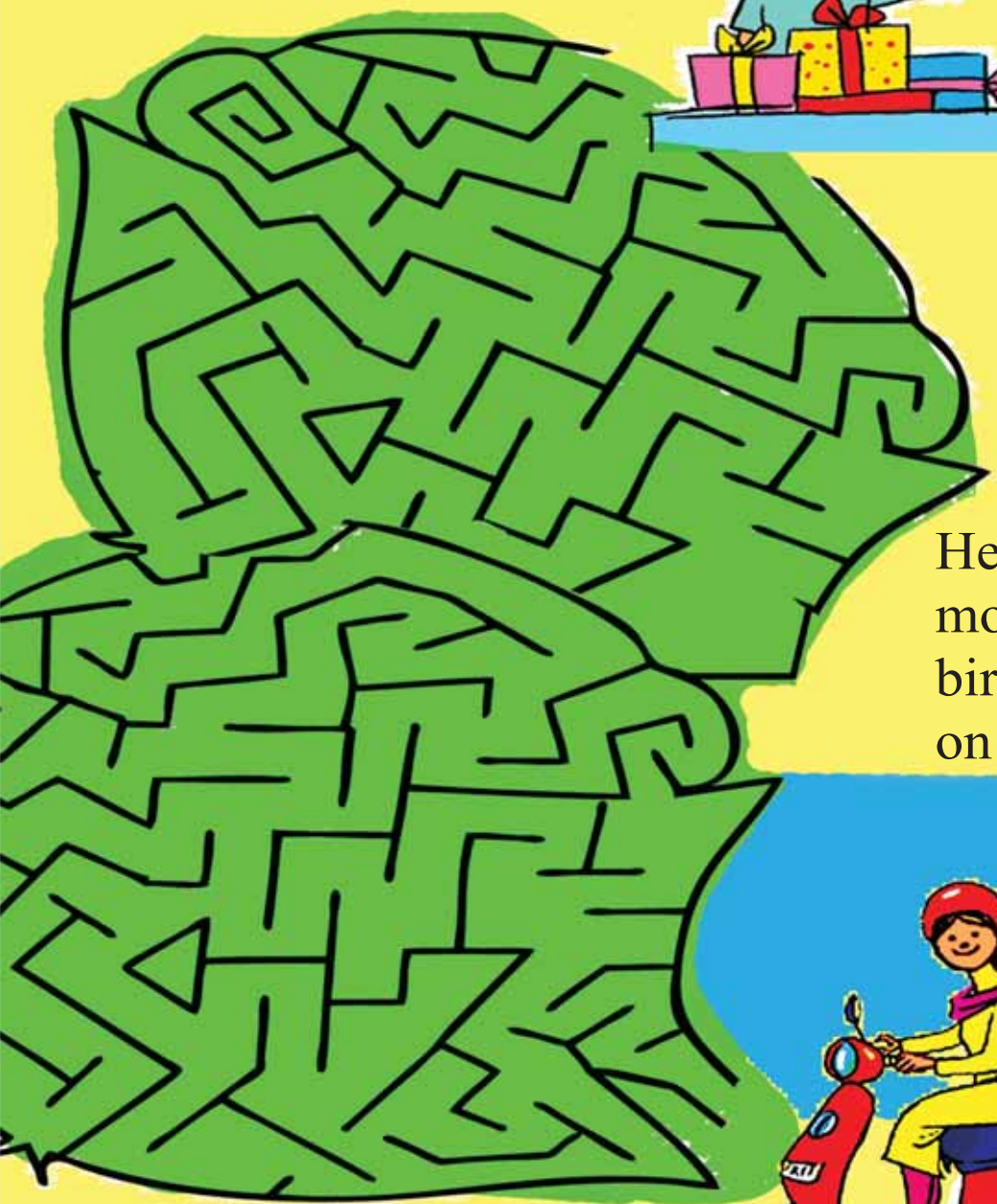

Help Ishaan's mother reach his birthday party on time !!

SHOW HER THE WAY !